बाइबल टीचर

वर्ष 18 | मार्च 2021 | अंक 4

सम्पादकीय

मसीही सहभागिता

कलीसिया को यीशु ने इस उद्देश्य से बनाया था ताकि पूरी मण्डली एक साथ एकता में होकर आपस में सहभागिता प्राप्त कर सके। बाइबल कभी भी यह नहीं सिखाती कि हम सब अपने-अपने घर में अराधना करे, बल्कि बाइबल की शिक्षा यह है कि आपस में मिलना-जुलना न छोड़े। (इब्रानियों 10:25) जब कलीसिया के लोग एक स्थान पर इक्ट्ठे होकर, एक साथ मिलकर उपासना करते हैं, तब वे आपस में सहभागिता प्राप्त करते हैं। कलीसिया एक परिवार की तरह है और इस परिवार में हम एक दूसरे से प्रेम करके उसे उपर उठाते है। जब हमारे जीवनों में तूफान आते है तब मैं समझ सकता हूँ कि हम कितने घबरा जाते हैं। मुझे याद है कि सन् 2020 में कोरोना वायरस से लोग कितने परेशान थे। कितने लोगों की नौकरियां चली गई थीं और कितने लोगों के परिवारों में परेशानियां आई परन्तु कुछ मसीही लोगों ने अपने सदस्यों की सहायता की, और उनके घरों में राशन तक पहुँचाया तथा पैसे से भी सहायता की। धन्य है वे मसीही जिन्होंने ऐसा किया।

निर्गमन 17:8-16 में जब मूसा के सामने मुसीबत आई तो उसने परमेश्वर की सहायता से उस तूफान का सामना किया। दूसरे भाई ने उसकी सहायता की ओर इसी तरह आज कलीसिया को भी सीखना चाहिए। हम पढ़ते है कि जब नये नियम की कलीसिया की स्थापना हुई थी तब सारे लोग पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में इक्ट्ठे थे और कई स्थानों से लोग वहां आये हुए थे। सब एक स्थान पर ठहरे हुए थे और वहां सब लोग एक साथ रह रहे थे। वहीं पर खाना पक रहा था और सारी कलीसिया के लोग एक साथ मिलकर रह रहे थे। वहां लगभग 3000 लोगों ने बपतिस्मा लिया था और सब अपने घरों को छोड़कर आये हुए थे। (प्रेरितों 2: 38-41)। बाइबल में लिखा है उन सब ने खुशी के साथ बपतिस्मा लिया था। (पद 41)। एक विशेष बात हम देखते हैं कि जहां यह सब लोग ठहरे हुए थे वहां पाँच बातें हुई थी और वे 5 बातें यह है:

पिन्तेकुस्त के दिन जिन्होंने बपतिस्मा लिया था:

1. वे सब विश्वास करने वाले इक्ट्ठे रहते थे, और उनकी सब वस्तुएं साझे की थी। (प्रेरितों 2:44)। वहां वे एक दूसरे का सहारा बने हुए थे। कोई बड़ा-छोटा,

धनी-निर्धन या जाति-पाति का भेदभाव नहीं था। सब आपस में मिलकर रहते थे। आपस में कोई भेदभाव नहीं होता था। सब मसीही एक-दूसरे के साथ प्रेम के साथ रहते थे। आज कलीसिया को यह बात सीखने की आवश्यकता है।

2. दूसरी बात उन मसीहियों के बारे में हम देखते हैं कि उनकी सब वस्तुएं साझे की थी (2:44) सबने माना था कि वे पापी है और सबने एक देह यानि कलीसिया होने के लिये बपतिस्मा लिया था। सब लोग एक दूसरे की सहायता करते थे और आपस में मिलकर रह रहे थे।

3. फिर एक और विशेषता उनमें यह थी कि वे स्वार्थी नहीं थे। (2:45) एक दूसरे के बारे में इतना ध्यान रखते थे कि अपनी-अपनी सम्पत्ति समान बेचकर आपस में एक दूसरे की सहायता करते थे। कया आज आप अपने मसीही भाई की किसी तरह से सहायता करते हैं?

4. एक और विशेषता जो नये नियम के मसीहीयों में हम देखते हैं वह यह है कि वे लोग प्रतिदिन मन्दिर में या भवन में इक्ट्ठे होते थे, और घर-घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सिधाई से भोजन किया करते थे। आपस में मिल बांटकर भोजन खाना और यह एक बहुत अच्छी विशेषता है जो कलीसिया में होनी चाहिए। जैसे आपस में भजन गाना और बाइबल अध्ययन करना तथा चाय पीना या भोजन करना। (प्रेरितों 2:46) जब कलीसिया के लोग आपस में बैठकर भोजन करते हैं तब इससे प्रेम बढ़ता है। क्या आपके यहां कलीसिया में कभी ऐसा होता है? कलीसिया में कई स्थानों पर कई लोग घर से खाना बनाकर लाते है और फिर सब मिलकर खाना खाते है। आपस में प्रेम के लिये यह एक बहुत अच्छा तरीका है।

5. पांचवीं खास बात हम यह देखते हैं कि वे एक साथ मिलकर आराधना करते थे। (प्रेरितों 2:47)। यदि आप उपासना सभा में नहीं आते तो आप कलीसिया के सामने एक अनुचित उदाहरण रख रहे हैं। यानि आपके लिये कलीसिया कोई महत्व नहीं रखती। कई सदस्य सोचते हैं कि जब दिल करेगा तब चले जायेगे। कई स्थानों पर लोग कुछ विशेष दिनों पर ही अराधना करने जाते हैं। परन्तु सारे संसार में मसीह की कलीसिया के लोग प्रत्येक रविवार को उपासना में जाते है। (प्रेरितों 20:7)। रविवार का दिन मसीह की कलीसिया के लिये विशेष होता है। यदि आप कलीसिया में लीडरशिप में है तो आप कभी भी उपासना में अनुपस्थित नहीं होंगे। जब आप कई दिनों तक नहीं आते तब लोग आपको भूल जाते है परन्तु कोई दुख मुसीबत आने पर आप कलीसिया को याद करते हैं। अक्सर कोई मुसीबत आने पर लोग कलीसिया की कई बार बुराई करते हैं, परन्तु ऐसा नहीं होना चाहिए अपनी सहभागिता कलीसिया के साथ बनाकर रखिये। कई बार लोग सदस्यों की बुराई करते हैं, कई सदस्य प्रचारक की बुराई करते हैं और वो भी अविश्वासियों के सामने। ऐसा नहीं होना चाहिए। अपनी कमजोरी तथा असफलता का ठीकरा कलीसिया या प्रचारक पर न थोपिये। चर्च की बुराई दूसरो से मत करिये। यदि आप चर्च या कलीसिया की बुराई करते हैं तो आप यीशु की बुराई करते हैं क्योंकि यह उसकी देह है और वह उसका सिर है। (कुलु. 1:18)। कई बार हम एक दूसरे के

बारे में ऐसी बुराई करते हैं कि लोग अराधना में आना बंद कर देते हैं और यदि हमारे कारण कोई अपने विश्वास से दूर चला जाता है तो उसका परिणाम हमारे सिर पर होगा। यीशु ने कहा था- ''और जो कोई इन छोटो में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए उसके लिये भला होता कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता और वह गहरे समुद्र में डुबोया जाता।'' यीशु ने आगे कहा, कि ठोकरों के कारण संसार पर हाय। ठोकरो का लगना अवश्य है; पर हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर लगती है परन्तु क्या आपके कारण कभी किसी मसीही भाई या बहन को ठोकर तो नहीं लगी?

प्रत्येक कलीसिया के सदस्य को यह समझना चाहिए कि मेरे कारण किसी सदस्य को ठोकर न लगे। बाइबल कहती है, ''आपस में एक सा मन रखो, अभिमानी न हो; परन्तु दीनों के साथ संगति रखो, अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न हो। बुराई के बदले किसी से बुराई न करो, जो बातें सब लोगों के निकट भली है, उनकी चिंता करो। जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो। हे प्रियो पलटा न लेना, परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है, मैं बदला दूंगा। बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो।'' (रोमियों 12:16-21)।

अच्छी कलीसिया की निशानी यह है कि सारे सदस्य आपस में प्रेम से मिलकर रहते हैं। एक दूसरे का आदर करते हैं। यदि कलीसिया में किसी कारण से किसी को ठोकर लगती है तो उसकी सहायता करें। यदि कोई विश्वास में निर्बल है तो उसको उपर उठायें। पौलुस कहता है, ...जो विश्वास में निर्बल है उसे, अपनी संगति में ले लो, परन्तु उसकी शंकाओं पर विवाद करने के लिये नहीं। (रोमियों 14 : 1)। जब लोग ऐसी कलीसिया को देखते हैं जहाँ सदस्य आपस में प्रेम से रहते हैं तो दूसरे भी वहां आना चाहेंगे। संसार में जहाँ कहीं भी मसीह की कलीसियाएं है वहां उतार-चढ़ाव आते रहते हैं परन्तु सबको कलीसिया की उन्नति के लिए कार्य करना चाहिए। क्या आप कलीसिया से प्रेम करते हैं? यदि हां तो मसीह सहभागिता को बनाये रखें। आपस में संगति रखना न छोड़ें।

मैं सुसमाचार से नहीं लजाता

सनी डेविड

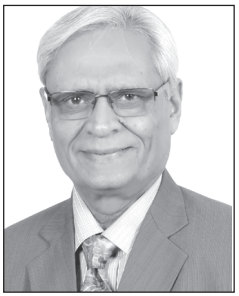

मित्रो! क्या कभी आप ने इस बात पर विचार किया है, कि क्यों मैं बार-बार अपने लेखों के माध्यम से आपको मसीह के सुसमाचार के बारे में बताता हूँ? आज भी मैं आपको वही सुसमाचार सुना रहा हूँ, जो आज से कई साल पहिले मैंने आपको सुनाया था। वास्तव में, जिस सुसमाचार को मैं आपको पिछले कई सालों से सुना रहा हूं, वह सुसमाचार आज

से लगभग दो हजार साल पुराना है। हजारों और लाखों लोगों ने पिछले दो हजार वर्षों में इस सुसमाचार को दुनिया-भर में प्रचार किया है, और आज भी कर रहे हैं। और लाखों और करोड़ों लोगों ने इस सुसमाचार को सुनकर इस में विश्वास किया है और इसे सारे जगत में माना है। परन्तु क्यों इस सुसमाचार का प्रचार किया जा रहा है? बहुत सारे लोग इस सुसमाचार के लिये चन्दा देते हैं। आप ही की तरह के बहुत से गरीब लोग, बहुत सी विधवाएं और छोटे-मोटे काम करने वाले लोग, जिन्होंने संसार-भर में इधर-उधर, इस सुसमाचार को सुनकर इसे माना है- वे ही लोग इस सुसमाचार को दूसरों तक पहुंचाने के लिये, अपनी बहुतायत में से और अपनी घटी में से कुछ न कुछ करके इस सुसमाचार के प्रचार के लिये धन दे रहे हैं। लेकिन वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? क्या इतने सारे धन से लोगों को रोटी, कपड़ा और मकान नहीं दिया जा सकता? क्या इस धन से बहुत से हस्पताल और स्कूल नहीं खोले जा सकते? जी हां, इस तरह से धन इक्ट्ठा करके, इस प्रकार के बहुत से दान-पुन्य के काम किये जा सकते हैं। पर सवाल यह है, हां, बात यह है कि क्या इस प्रकार के कार्यों को करके किसी एक भी आत्मा को नरक में जाने से बचाया जा सकता है?

परमेश्वर के वचन की पुस्तक, बाइबल में, एक जगह हम इस प्रकार पढ़ते हैं, कि एक बार जब प्रभु यीशु मसीह कहीं जा रहे थे, तो मार्ग में चलते-चलते उनके पीछे एक बहुत बड़ी बीड़ हो ली थी। कुछ समय बाद यीशु ने अपने चेलों से कहा, कि उन लोगों के, भोजन के लिये कुछ प्रबंध किया जाए। लेकिन प्रभु के चेले इस बात को सुनकर दंग रह गए- क्योंकि लोगों की भीड़ पांच हजार से भी अधिक थी। लेकिन उन लोगों की भीड़ में एक लड़का था, जो शायद अपने काम पर जाने के लिए घर से निकला था। उसके पास अपने खाने के लिए पांच रोटियां और दो छोटी मछलियां थी। प्रभु यीशु ने उसका वो खाना उससे ले लिया और अपने चेलों को आज्ञा दी कि वे सब लोगों को बैठाएं। और फिर, प्रभु ने उस भोज के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया। और तब चेलों को देकर कहा, कि उसे सब लोगों में बांट दो। और आश्चर्य की बात तो यह है, कि वे भोजन बांटते गए और लोग खाते रहे, और यहां तक की जब सब लोगों ने पेट भर के अच्छी तरह से खा लिया तो भोजन के बचे हुए टुकड़ों से बारह टोकरे भर के उठाए गए। प्रत्यक्ष ही है, कि ऐसा बड़ा आश्चर्यक्रम देखकर वे सब के सब लोग बड़े ही प्रसन्न और बड़े ही अर्चोभित थे। और वे सब प्रभु का बड़ा ही आदर और सम्मान करना चाहते थे। लेकिन प्रभु को इसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। सो वह वहां से चला गया।

किन्तु यह कहानी यही समाप्त नहीं हो गई। आगे लिखा है कि जब दूसरा दिन आया तो वे सब के सब फिर यीशु को ढूंढ़ने लगे। और जब वह उन्हें मिल गया, तो उन्होंने प्रभु से पूछा कि हे प्रभु, ''हम तो तुझे ढूंढ़ते ही रह गए, तो तू कहां चला गया था?'' लेकिन प्रभु को मालूम था, कि वे उसे क्यों ढूंढ़ रहे थे। सो प्रभु ने उनहें जवाब देकर कहा, कि ''नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये परिश्रम करो जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।'' (यूहन्ना 6:27)।

मित्रो! ध्यान दें इस बात पर कि प्रभु ने उन्हें फिर भोजन नहीं खिलाया। परन्तु उसने उन्हें उपदेश देकर कहा, कि वे पृथ्वी पर के शारीरिक भोजन की चिन्ता करना छोड़कर स्वर्ग के अनन्त जीवन के भोजन को प्राप्त करने का प्रयत्न करें। क्योंकि पृथ्वी पर शारीरिक भोजन नाशवान है। पर वास्तव में मनुष्य को उस भोजन की आवश्यकता है जो स्वर्गीय है, वो भोजन जो आत्मा के लिये है, वो भोजन जो आत्मिक है। पर जहां तक इंसान का प्रश्न है, तो वह केवल उन्हीं वस्तुओं को ढूंढ़ता है, और केवल उन्हीं वस्तुओं को प्राप्त करना चाहता है, और उन्हीं वस्तुओं पर अपना मन लगाता है जो शारीरिक है। उसका ध्यान तो केवल उसी भोजन को प्राप्त करने पर जाता है, केवल शारीरिक चंगाई पाने की तरफ ही जाता है। उसे अपनी आत्मा की कोई चिंता नहीं है। क्योंकि वह तो अपनी आत्मा के महत्व को जानता ही नहीं। लेकिन परमेश्वर, जिसने इंसान को बनाया है, जिसने मनुष्य को जीवन दिया है, वह यह बात ब-खूबी जानता है, कि मनुष्य का शरीर तो नाशमान है, पर उसकी आत्मा अमर है। इसलिये, उसे मनुष्य के शरीर की उतनी नहीं परन्तु मनुष्य की आत्मा की अधिक चिंता हैं। मनुष्य के शरीर के लिये तो परमेश्वर ने तरह-तरह की भोजन वस्तुएं बनाई हैं। लेकिन मनुष्य की आत्मा को पाप के कारण नरक में जाकर नाश होने से बचाने के लिये उसे खुद अपने सामर्थी वचन को एक मनुष्य के रूप में जगत में भेजना पड़ा। और वही मनुष्य यीशु मसीह था। प्रभु यीशु ने स्वयं कहा था, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को क्रूस के ऊपर एक अपराधी की मानिन्द मरने के लिये भेजा था। और जब परमेश्वर की ओर से समय पूरा हुआ था, तो परमेश्वर ने होने दिया था, कि उसका पुत्र निर्दोष होते हुए भी एक अपराधी की तरह पकड़ा जाए, और झूठी गवाहियों के आधार पर दोषी ठहराया जाए, और उस समय के विधान के अनुसार, एक क्रूस के ऊपर चढ़ाकर मारा जाए।

और जब यह काम परमेश्वर की इच्छा से हो गया था तो मरे हुए यीशु को एक कब्र के भीतर गाड़ा गया था। पर यह अनहोना था कि परमेश्वर का पुत्र मनुष्यों की तरह कब्र के भीतर दफन रहता। सो परमेश्वर की सामर्थ से वह तीसरे दिन फिर से जिंदा हो गया था। और स्वर्ग पर वापस उठा लिये जाने से पहले, उसने अपने अनुयायीयों को यह आज्ञा दी थी, कि तुम पृथ्वी पर सारे जगत में जाकर सब लोगों को मेरा यह सुसमाचार सुनाओ, कि मेरे बलिदान के द्वारा परमेश्वर ने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित कर दिया है। और जो सुनकर विश्वास लाएगा और अपना मन फिराएगा और अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेगा, उसे पापों से छुटकारा और उद्धार मिलेगा। (मत्ती 28:19-20, मरकुस 16:15-16; लूका 24:46-47; प्रेरितों 2:37-38)।

और यही कारण है, मित्रो कि क्यों एक बार फिर से मैं आपको वही सुसमाचार सुना रहा हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि आपको और सारे जगत को इसकी जरूरत

है। पर न केवल सुसमाचार को सुनना ही जरूरी है, पर यह भी जरूरी है कि सुनने वाले उस पर विश्वास लाएं और उसे मानें। और मेरी आशा है कि आप ऐसा ही करेंगे। क्योंकि जबकि परमेश्वर ने एक ऐसा विशाल काम किया है, तो क्या हम उसके अनुग्रह को व्यर्थ ठहराएंगे?

पुराना मनुष्यत्व उतार डालो पाप

जे.सी. चोट

इस लेख में हम यह देखना चाहेंगे कि पुराने मनुष्यत्व को उतारने का क्या अर्थ है? पौलुस अपनी पत्री में लिखता है ''तुम अपने चाल चलन के पुराने मनुष्यत्व को जो भरमाने वाली अभिलाषाओं के अनुसार होता जाता है उतार डालो'' (इफि. 4:22)। पुराने पाप से भरे हुये जीवन को एक मसीही व्यक्ति उतार डालता है। हम यह देखना चाहते हैं कि पुराने जीवन को कैसे उतारना है और नये को कैसे पहिनना हैं तथा मसीह में नया जीवन कैसे आरंभ करना है? अपने पापों से मन फिराकर कोई व्यक्ति किस प्रकार से यीशु की देह से जुड़ जाता है और यह देह उसकी कलीसिया है।

आज लोगों के मनों से पाप और उसकी परिभाषा मिट गये हैं। शराब और नशीली दवाएं लेना तथा अन्य कई बुरी बातों को आम बात समझा जाता है। जिन बातों को एक समय में बहुत बुरा समझा जाता था। परन्तु मैं एक अच्छी खबर आपको देना चाहता हूं कि यीशू द्वारा आप पाप से बच सकते हैं। पाप तो पाप है शायद चूना फेरकर लोग पाप को छिपा ले परन्तु पाप अपने स्थान पर वैसे ही है।

जिन पापों को बाइबल बताती है वो है शरीर के काम जिनके बारे में प्रेरित पौलुस कहता है, शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात व्यभिचार गंदे काम, लुचपन मूर्ति पूजा, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध फूट विधर्म, डाह मतवालापन लीला क्रीड़ा और इनके ऐसे और काम हैं इनके विषय में मैं तुम को पहले कह भी चुका हूं कि ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। (गलतियां 5:19-21) आगे फिर वह कहता है कि क्या तुम नहीं जानते, कि अन्यायी लोग परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे? धोखा न खाओ न वैश्यागामी, न मूर्तिपूजक न परस्त्रीगामी, न लुच्छे न पुरुषगामी, न चोर, न लोभी, न पियक्कड, न गाली देने वाले, न अंधेरे करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस होंगे। (1 कुरि. 9:6-10)।

यूहन्ना ने मसीहीयों को लिखा था, कि न तो तुम संसार से और न संसार में की वस्तुओं से प्रेम रखो, यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है। अर्थात शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड वह पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार ही की

ओर से हैं और संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेगा। (1 यूहन्ना 2:15-17)।

प्रेरित पौलुस मसीहीयों को लिखता है, पर हम जानते हैं कि यदि कोई व्यवस्था को व्यवस्था की रीति पर काम में लाए, तो वह भली है। यह जानकर कि व्यवस्था धर्मी जन के लिये नहीं, पर अधर्मियों, निरंकुशों, भक्तिहीनो पापियों अपवित्रों और अशुद्धों, मां बाप के घात करने वालों, हत्यारों, व्यभिचारियों, पुरुष गामियों, मनुष्य के बेचने वालों और इन को छोड़ कर उपदेश के सब विरोधियों के लिये ठहराई गई है। यही परमधन्य परमेश्वर से महिमा के उस सुसमाचार के अनुसार है, जो मुझे सौंपा गया है। (1 तीमु. 1:8-11)

फिर प्रेरितों ने यह बताया था कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आयेंगे क्योंकि लोग अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निंदक माता-पिता की आज्ञा टालने वाले कृत्घन, अपवित्र, भय रहित, क्षमा रहित, दोष लगाने वाले असंयमी, कठोर, भले के बैरी, विश्वासघाती, ढीट, घमण्डी और परमेश्वर के नहीं वरन सुख-विलास ही के चाहने वाले होंगे। वे भक्ति का भेष तो धरेंगे पर उसकी शक्ति को न मानेंगे, ऐसे से परे रहना (2 तीमु. 3:8-5)। यहां हम देखते हैं कि पाप के कितने सारे रूप हैं।

ऐसी बातें जो गलत है और परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध है और यह ऐसी बातें है जिन्हें बाइबल कहती है कि यह शरीर के काम है। यह ऐसी बातें हैं जो अपवित्र हैं। यह ऐसे कार्य हैं जो मनुष्य के जीवन को बर्बाद करते हैं।

पाप क्या है? यह व्यवस्था का विरोध करना है। व्यवस्था का अर्थ है परमेश्वर के नियम का विरोध। यूहन्ना ने लिखा था, जो कोई पाप करता है, वह व्यवस्था का विरोध करता है, और पाप तो व्यवस्था का विरोध है, और तुम जानते हो कि वह इसलिये प्रगट हुआ, कि पापों को हर ले जाए; और उसके स्वभाव में पाप नहीं। (1 यूहन्ना 3:4-5)। फिर वह कहता है कि जो कोई उसमें बना रहता है वह पाप नहीं करता; जो कोई पाप करता है, उसने न तो देखा है, और न उसको जाना है। हे बालको किसी के भरमाने में न आना जो धर्म के काम करता है वही उसकी नाई धर्मी हैं। जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है, क्योंकि शैतान आरंभ से ही पाप करता आया है। परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ है, शैतान के कामों को नाश करे। (1 यूहन्ना 3:6-8)। यीशु इस संसार में पाप रहित जीवन लेकर आया ताकि अपने आप को लोगो के पापों के लिये क्रूस पर बलिदान करे।

एक मसीही स्त्री के रूप में मेरा काम

बैटी बर्टन चोट

परिचयः समर्पण, ''अपने आपको परमेश्वर को सौंप दो'' से आपका क्या मतलब है? यदि आपका मतलब सचमुच में यही है, तो ऐसा करने के जवाब में परमेश्वर

क्या करेगा? हमें ऐसा समर्पण करते हुए बहुत चौकस रहने की आवश्यकता है क्योंकि, शुरू में हो सकता है कि हमें इस बात का कोई ध्यान न हो कि परमेश्वर हमारे साथ क्या कर सकता है?

मेरी पृष्ठभूमि:

किशोरावस्था, सुसमाचार का आज्ञापालन

2. आपकी किशोरावस्था और युवावस्था के साल जो कुछ आप पढ़ती हैं, जिससे बातचीत करती हैं, उसी से आगे आने वाले समय में आपके जीवन को आकार मिलेगा। युवावस्था (टीनएज) के सालों के दौरान आम तौर पर बहुत भारी गलतियां हो जाती हैं जो व्यक्ति के सारे जीवन को प्रभावित कर देती है। किशोरावस्था के दौरान, जो कि कच्ची मिट्टी को ढालने के साल होते है माता-पिता को नमूना, सहजबुद्धि के तर्क, बाइबल के नियम तथा अंतिम बात के रूप में माता-पिता के अधिकार का इस्तेमाल करते हुए अपने बच्चों के साथ नजदीकी को और प्रेम-पूर्ण संबंध को बढ़ाना आवश्यक है, ताकि जब वे टीनएज में पहुंचे (इन सालों में आजाद सोच और विद्रोही मन होने की संभावना अधिक रहती है), तो अधिकतर कठिन रूप पहले ही दिया जा चुका हो।

जीवन साथी का चयन करना:

1. अरेंजड मैरिज (या माता-पिता की मर्जी से शादी)

क. भारत में माता-पिता की मर्ज़ी के अनुसार विवाह होना आम बात है। यदि मसीही माता-पिता अपने बच्चों के लिए जीवन साथी चुनते हैं तो उनका पहला ध्यान यह हो कि वे अपने बेटे या बेटी के लिए जिसे चुन रहे हैं यानि वह प्रभु की कलीसिया का समर्पित मैंबर हो, या अगर ऐसा नहीं होता है, तो माता-पिता की पहली प्राथमिकता उस व्यक्ति को वचन सिखाकर प्रभु में लाना हो।

ख. भारतीय संस्कृति में आम-तौर पर पैसा बड़ी चिंता का कारण होता है जिसमें 'दहेज' और शानो शौकत से शादी करने की बात होती है। आमतौर पर 'मसीही' शादियों में भी, लोग बड़े कर्ज में डूब जाते हैं जिस कारण से परिवार के लोग कई-कई सालों तक कर्ज उतारते रहते हैं। जब मसीही लोग मसीही लोगों से शादी करते हैं तो उन्हें चाहिए कि दिखावे के लिए फिजूलखर्ची छोड़कर शादी के मसीही तरीके को अपनाएं।

ग. शानो शौकत से शादी करना महत्वपूर्ण बात नहीं है, महत्वपूर्ण बात दो लोगों के जीवन की है और उस दहेज या फिजूलखर्ची पर पैसा लगाने के बजाय नये मसीही जोड़े को अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए आर्थिक रूप से सहायता करना अधिक बेहतर होगा।

डेटिंग या लड़के लड़की की विवाह से पहिले मित्रता

क. ज्यादातर मामलों में यदि हम गैर मसीही लोगों के साथ डेट करते हैं तो हम उनसे बहुत प्रभावित हो जाएंगे। इससे उलटा-पुलटा सोचने, नशे ओर शराब आदि लेने की आदतों में पड़ सकते हैं।

ख. यह सच है कि कई बार किसी गैर-मसीही से विवाह करने से वह व्यक्ति प्रभु में आ जाता है और एक मजबूत मसीही परिवार बन जाता है, परन्तु आंकड़े बताते हैं कि जब कोई मसीही लड़की या लड़का किसी गैर-मसीही लड़के या लड़की से

शादी करती या करता है तो ज्यादतर मामलों में तो यही होता है कि वह मसीही व्यक्ति कलीसिया को छोड़ देती या देता है और परमेश्वर से दूर हो जाती/जाता है।

ग. यदि कोई गैर मसीही के साथ डेट करता/करती है तो शुरू से ही या यह कमिटमेंट हो, कि या तो पूरे समर्पण के साथ सच्चाई को समझ ले और मान ले वरना मैं उसके साथ शादी नहीं करूंगी/गा। इससे हम देख सकते हैं कि कलीसिया के बाहर की गई डेटिंग हमेशा के लिए खतरा बन सकती है। यह एक ऐसा फैसला है जिससे व्यक्ति के बच्चों, नाती-पोतों तथा पीढ़ियों तक का अनन्तकालिन भविष्य तय हो जाएगा। क्या आप ऐसा बुरा फैसला लेना चाहती है जो आपके छोटे-छोटे बच्चों के लिए नरक में जाने का कारण इसलिए बन जाए क्योंकि उन्हें कभी परमेश्वर का पता नहीं चला?

घ. यदि आपको कोई मसीही जीवन-साथी नहीं मिलता है तो बेहतर यही होगा कि आप कभी शादी ही न करें।

विवाह में पत्नी और पति का रिश्ता: आरंभ से, हव्वा को आदम को पूर्ण करने के लिए सृजा गया था, ताकि वे दोनों एक तन बन जाएं (उत्पत्ति 2:24)। विवाह स्त्री और पुरूष के बीच होता है। न कि पुरूष का विवाह पुरूष के साथ।

1. इफिसियों 5:22, 23 हे पत्नियों, अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्ता है।

क. औसतन, पुरुष, स्त्रियों से शारीरिक रूप में ताकतवर होते हैं, वे काम प्रभाव डालने वाले होते हैं और आसानी से किसी बात पर अपनी सोच को बदलते नहीं है। परमेश्वर की यह योजना थी कि पुरूष शारीरिक, आर्थिक और आत्मिक रूप से घर के मुखिया हो और परिवार के लिए जिम्मेदार हो। जब पति इस लीडरशिप में खरा नहीं उतरते हैं तो उस परिवार में परेशानी होती है।

ख. आमतौर पर महिलाएं पुरुषों की अपेक्षा भावनाओं में अधिक बह जाती हैं। हम स्त्रियों के अंदर कोमलता, प्रेम, समझ की बड़ी खूबियां हैं और हमें अपने पति के समर्थन में मजबूत होने, उसकी सोच और निर्णयों में उसकी सहायता करने के लिए बनाया गया है, परन्तु हमें इस बात को भी याद रखना आवश्यक है कि वह घर का मुखिया है और अपनी लीडरशिप के लिए उसे परमेश्वर को जवाब देना है। जब हव्वा परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने के लिए शैतान की बातों में आ गई तो वचन कहता है कि तब उसने उस में से फल तोड़कर खाया, और अपने पति को भी दिया, और उसने भी खाया (उत्पत्ति 3:6)। फिर परमेश्वर ने दोनों के ऊपर अपनी जिम्मेदारियां पूरी न कर पाने के कारण दण्ड की आज्ञा दी। पर किसी पति के लिए परिवार के मुखिया के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा न कर पाने की यह पहली घटना थी।

2. स्त्रीवादी आन्दोलनों से होशियार रहें जिन्होंने अमेरिकी परिवार तथा संस्कृति को बहुत नुकसान पहुँचाया है और तेजी से इन्हें भारत में लोगों द्वारा स्वीकार किया जा रहा है। इस शिक्षा में यह कहा जाता है कि लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए।

क. इस सोच, के कारण, जो कि परिवार के लिए परमेश्वर की योजना के उलट है, बहुत सी महिलाएं, अब 'होममेकर (गृहणियां) नहीं रहीं, बल्कि घर के बाहर फुल टाइम जॉब करती हैं। कई मामलों में यह बेहद जरूरी हो सकता है, पर आमतौर

पर टूटे हुए परिवारों तथा उपेक्षित और अनपढ़ बच्चों का कारण बनता है। इससे ''लिव इन'' के हालात भी बन गए हैं जहां आदमियों को आर्थिक रूप में या किसी भी अन्य प्रकार से अपने 'परिवार' की सपोर्ट करने के लिए किसी प्रकार की जिम्मेदारी अच्छी नहीं लगती। कुछ पति अपनी जिम्मेवारी निभाने से भागते हैं।

ख. इस मूवमेंट के कारण महिलाओं की रक्षा अब देश के कानून से नहीं होती बल्कि उनसे आदमियों की तरह काम का पूरा बोझ और जिम्मेदारियां उठाने की उम्मीद की जाती है। कई स्त्रियां यह मानने के बहकावे में आ जाती है कि उन्हें इस मूवमेंट के द्वारा बहुत कुछ हासिल हुआ है। जबकि सच्चाई यह है कि उन्होंने उस सब को खो दिया है जो उनके और उनके परिवार के लिए आवश्यक था।

5. मां से बच्चे, अपने पति की सहायक के रूप में अपने काम के बाद मेरी सबसे बड़ी चिंता मेरे बच्चे हैं।

1. गर्भ में पड़ने से लेकर जन्म और बचपन के सारे समय तक, मुझे चाहिए उनकी भौतिक आवश्यकताओं के लिए जो भी करना आवश्यक हो मैं करूं।

2. मुझे उनके साथ, उनके पिता के साथ और अपने आस-पास के हर किसी के साथ बात करने के ढंग से मसीहियत के व्यवहारों को सिखाना आवश्यक है। सारा दिन मुझे उनके अंदर परमेश्वर के वचन को डालते रहना और उसके साथ संबंध को बढ़ाना आवश्यक है।

3. हर रोज कुछ समय उनके पिता की अगुआई में पारिवारिक प्रार्थना (फैमिली डिवोशन) का समय होना आवश्यक है, परन्तु इसमें सब लोग सवाल और चर्चा करते हुए एक दूसरे से बात करें। उन्हें याद करने के लिए आयतें समझानी आवश्यक है और मुझे चाहिए कि न केवल उनके स्कूल की किताबें पढ़ने में, बल्कि बाइबल क्लास के पाठों को भी सीखने में सहायता करूं। यदि उन्हें (या मुझे) बच्चों की बाइबल में से गीत आते हों, तो हम सब घर में मिलकर गा सकते हैं।

4. मुझे उन्हें सिखाना आवश्यक है कि आराधना क्या है और यह कि वे आराधना में शांत रहा करें और परमेश्वर के प्रति सम्मान दिखाएं, उन्हें यह सिखाना भी आवश्यक है कि हम उसकी उपस्थिति में हैं, उसके पवित्र स्वर्गदूतों का घेरा हमारे चारों ओर हैं।

5. मुझे कुछ नियम और मानक ठहराना और उन्हें मानना भी आवश्यक है। किसी आज्ञा को जारी करने से पहले (''नहीं करो'' या यह करो) मुझे समझ और संयम से काम लेना आवश्यक है। जब मैं यह कहती हूं कि कुछ किया जाना आवश्यक है, तो मैं इसे बच्चों की दलीलों और बच्चों के रोने और मचलने से दब न जाऊं। जो कुछ मैंने कहा है उसे मानकर मुझे लागू करना आवश्यक है। पर बोलने से पहले मुझे विचार करना आवश्यक है।

6. जब भी जरूरी हो मुझे आज्ञा न मानने वाले या विद्रोही बच्चे को ठीक करने के लिए कड़ाई बरतनी आवश्यक है। इसके कई तरीके हो सकते हैं जो बच्चे पर और बात न मानने पर निर्भर करते हैं।

क. कई बार कोई चीज छीन लेना काफी होता है।

ख. कई बार हाथ पर या पीठ पर थपकी मार देना काफी होता है।

ग. कई बार किसी एकांत जगह में (जहां उसके चिल्लाने को कोई न सुन सके, जो कि किसी के वहां पर ''सुनने वाला न होने पर थोड़ी देर में बंद हो जाएंगी)

काफी होता है।

घ. कई बार नंगी टांगों पर थोड़ी सी छड़ी लगा देना जरूरी होता है। (पहले इसे अपने पर मार कर देख लें जिससे पता चल जाए कि कितनी जोर से मारा जाए तो काफी होगा। जिससे बात समझ में तो जाए पर ज्यादा चोट न लगे)। जब छड़ी किसी ऐसी जगह पर, बच्चों की पहुंच से दूर रखी जाती है, पर उन्हें पता हो कि वह कहां है, तो केवल उस ओर इशारा कर देने पर ही वे समझ जाएंगे कि छड़ी बिना किसी और डांट के घर में कई समस्याओं को रोकने के लिए काफी हो सकती है।

5. पर सबसे बढ़कर, न केवल कामों में बल्कि बातों में भी यह दिखना आवश्यक है कि अपने बच्चों के साथ सारे संबंध में मेरे दिल में उनके लिए प्यार है।

परिवार के दूसरे लोगों के साथ संबंध हो सकता है कि आप उन बहुत आशीषित महिलाओं में से हो जिनके माता-पिता मसीही है, भाई बहन मसीही है यानी आपको हर ओर से आत्मिक सहायता प्राप्त होती है। यदि ऐसा है तो आपको और उन्हें एक दूसरे से सामर्थ मिल सकती है।

1. पर यदि आप उन लोगों में से है जिनके परिवार में केवल आप ही मसीह की कलीसिया की मैंबर हैं तो उनके सामने जिया गया आपका जीवन उन्हें आप में और रिश्तेदारों में फर्क समझने में सहायता कर सकता है। दूसरों का ध्यान रखने वाली, सहायता करने वाली, निस्वार्थ बनें; रूखी और आलोचनात्मक न बनें, जो हर समय लड़ने की ताक में रहती हो। यदि आप सास हैं, तो दामाद या बहु के साथ प्रेम और आदर से पेश आएं, जैसे वह आपके घर में ही जन्मे हों और जैसे आप चाहती है कि आपके ससुराल वाले आपके साथ पेश आएं। हर रिश्ते में बाइबल का ''**सुनहरा नियम**'' बिल्कुल काम करता है। ''जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो'' (मत्ती 7:12)।

2. हो सकता है कि आपके साथ वैसा व्यवहार न हो जैसा आप दूसरों के साथ करती हैं पर आपका व्यवहार आपको अपने दिल में गुस्सा और नफरत रखने से रोकता है सो यह आत्मिक और शारीरिक रूप में आपको नुकसान होने से बचाता है।

कलीसिया में कामः परमेश्वर ने यह तय किया है कि कलीसिया में ऐल्डरों, डीकनों, तथा टीचरों के रूप में लीडरशिप दो। क्या महिलाओं के करने के लिए कोई काम है? हां! मैं यूओदिया को भी समझाता हूं और सुन्तुखे को भी, कि वे प्रभु में एक मन रहें। हे सच्चे सहकर्मी मैं तुझ से भी विनती करता हूं, कि तू उन स्त्रियों की सहायता कर क्योंकि उन्होंने मेरे साथ सुसमाचार फैलाने में.... मेरे अन्य सहकर्मियों समेत परिश्रम किया...'' (फिलिप्पियों 4:2, 3)।

1. हम अपने घरों को कलीसिया की सभाओं (आराधना) के लिए खोल सकती है। इस काम का जिक्र पौलुस द्वार रोमी मसीहियों के नाम अपने पत्र में धन्यवाद के साथ हुआ है।

2. आप अन्य महिलाओं तथा बच्चों को ''कलास'' के रूप में सिखा सकती हैं।

3. आप प्रार्थना भवन की साफ सफाई करके, प्रभु भोज के बर्तनों को साफ करके, किसी भी और काम को करके सहायता कर सकती है, जिससे इक्ट्ठा होने वाली जगह पर होने वाली जरूरतों को पूरा किया जा सके।

4. आप इस बात का ध्यान रख सकती है कि मण्डली में कोई बीमार या जरूरतमंद तो नहीं है, और फिर उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए जो भी आवश्यक हो, कर सकती है।

5. जब आपके यहां सुसमाचार सभाएं होती हैं और बाहर की मण्डलियों से कोई प्रचारक या मेहमान आए तो हम मसीही स्त्रियां उनका आतिथ्य सत्कार करते हुए उनके लिए अपने घरों को खोल सकती है।

6. आप प्रभु-भोज के लिए हर हफ्ते रोटी तैयार कर सकती है। उसे बनाने का तरीका इस प्रकार हैं-

1 कप मैदा (आटा)

1/4 कप जैतून का (या कोई और) तेल

1/4 कप पानी

थोड़ा-सा नमक

सब को मिलाकर गूंध लें और रोटी बना लें।

संसार में काम हो सकता है कि मित्रो और पड़ोसियों और यहां तक कि अपने सहकर्मियों के साथ अपनी बातचीत में, केवल मसीही स्त्री ही हो, जो सुसमाचार के साथ उनके साथ सम्पर्क में हो।

1. उनके सामने मसीहियत को जीए।

2. उनके सामने धर्म के विषय या किसी काम को जो आप कलीसिया में कर रही हैं, बताते हुए शर्मनाएं नहीं। हम एक दूसरे के साथ उन बातों को करते हैं जो हम कर रहे होते हैं, तो उसी प्रकार से सहज ढंग से मैं उन्हें एक मसीही के रूप में अपनी गतिविधियों को बताते हुए, उन्हें जानने में सहायता कर सकती हूं।

3. मैं अपने आस पड़ोस तथा अन्य मित्रों और जानकारो कों घरों में जाना, सभाओं में आने का निमन्त्रण दे सकती हूं। उन्हें साप्ताहिक आराधना या विशेष प्रार्थना सभाओं में बुलाएं।

4. मैं अपने घर में 'वीकली या सप्ताह के दौरान' बाइबल स्टडी में पड़ोसियों को आने के लिए कह सकती हूं।

5. अगर मेरे पड़ोसियों या जानकारों में कोई बीमार हो या किसी को कोई खास जरूरत हो या किसी पर कोई मुसीबत आ पड़ी हो तो मैं उनकी सहायता के लिए जो भी मुझ से बन पड़े कर सकती हूं। मसीही लगाव की यह अभिव्यक्ति परमेश्वर के प्रेम भरे मन को, और मसीही लोगों के और संसार के लोगों के बीच के बड़े अन्तर को दिखा सकती है।

सारांशः परमेश्वर ने महिलाओं को इसलिये सृजा क्योंकि उसे मालूम था कि हम मनुष्यजाति की उसकी सृष्टि को पूरी करेंगी। हमें अपने आपको कभी भी पुरुषों से दूसरे दर्जे का नहीं मानना चाहिए। महिलाओं के बिना मनुष्य जाति खत्म हो जाती। ऐसी महिलाओं के बिना जैसी परमेश्वर हम से उम्मीद रखता है, संसार की सारी संस्कृति अंत में सदोम और अमोरा जैसी बन जाती, और अंत में परमेश्वर द्वारा नष्ट कर दी जाती। विवाह में बिना भक्त स्त्रियों, घर परिवार और संसार, इन रिश्तों के लिए परमेश्वर की अधिकतर योजना खत्म हो जाती। हमारे पास करने के लिए महत्वपूर्ण कार्य है। आइए बाहर निकलकर अपने बाकी जीवन में अपने आपको हर रोज हर घड़ी समर्पित कर दें।

समाज में मसीही के रूप में कार्य – यदि बपतिस्मा लेने के बाद हम में से हर कोई उस नये संसार में फौरन चला जाए जिसे यीशु उद्धार पाए हुओं के लिए तैयार कर रहा है, तो एक भी आत्मा पाप में गिरकर नाश न होती। हमें इस संसार में क्यों छोड़ा गया है?

परन्तु एक अंतिम विचार किया जाना आवश्यक है। हमारे प्रभु के स्वर्ग में लौट जाने से पहले, उसने क्या किया? यीशु ने उनके पास आकर कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ, और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूं (मत्ती 28:18-20)।

जिस लक्ष्य को पाने के लिए वह आरंभ से काम कर रहा था, वह पापी मनुष्य के उस तक बहाली का मार्ग था। यह काम केवल लोगों द्वारा सुनकर उसे मानने से ही हो सकता है ताकि वे परमेश्वर के परिवार अर्थात कलीसिया में उसकी संतान बन सके। आवश्यक अगुआई के लिए उसने नया नियम दे दिया है, पर संसार तक संदेश को पहुंचाने का वास्तविक कार्य मनुष्य के हाथों में दिया गया है।

इस पर विचार करें परमेश्वर का अबदी कार्य अर्थात उद्धार का अनन्त दान, हमारे हाथों में रखा गया। हम इसका क्या करें? क्या हम उदासीन होकर इसे खामोशी से दबाएं रखें, अपने साथ ही इस संदेश को मरने दें, या खोए हुए संसार में परमेश्वर की आवाज बन जाएं?

कहानी बताई जाती है जिसमें स्वर्गदूत यीशु के मानवीय देह में जनम लेने, उसकी सुनने वालों को उन्हें सिखाने के उसके काम को, देख रहे थे। उसकी मौत पर वे डर से सहम गए और फिर उसके कब्र में से जी उठने पर विजय का आनन्द मनाने लगे। जय जयकार! जब वह स्वर्ग में ऊपर उठा लिया गया और अपने सिंहासन पर जा बैठा तो वे उत्सुकता से उसकी ओर बढ़े।

अब हमें पता चला कि आप इतने समय से क्या कर रहे थे। वे पुकार उठे। चलो चलकर संसार को बताते हैं कि आप उन्हें बचाने के लिए मर गए।

नहीं, यीशु ने उत्तर दिया। यह तुम्हारा काम नहीं है।

तो फिर, यह किसका काम है? वे हैरान होकर पूछने लगे।

मैंने अपने चेलों को सौंप दिया है।

क्या कहा??? क्या आपने वह अबदी कार्य मनुष्यों के हाथों में सौंप दिया? वे अविश्वासी से होकर पूछने लगे।

हां, यीशु ने उत्तर दिया।

पर प्रभु, स्वर्गदूतों ने एतराज जताते हुए कहा, आप मनुष्यों पर भरोसा नहीं कर सकती। संसार में पाप आदम और हव्वा ही लेकर आए थे। यहूदा ने आपके साथ विश्वासघात किया था। यहां तक कि शमौन पतरस ने भी आपका इंकार किया। और आपने सब कुछ उसी के हाथों में, और उन मनुष्यों के हाथों में, आने वाले युगों तक दे दिया।

हां, प्रभु ने उत्तर दिया।

पर निश्चय ही यदि वे नहीं कर पाए तो निश्चय ही आपके पास कोई और योजना होगी।

नहीं, मेरी कोई और योजना नहीं है....।

बूढ़ी स्त्रियाँ

सूज़ी फ्रैड्रिक

बूढ़े होना जीवन का एक भाग है। यह जीवन चलता रहता है तथा एक समय आता है कि हम बूढ़े हो जाते हैं। परमेश्वर ने जैसी हमारी रचना की है यह उसकी योजना का एक भाग है। नीतिवचन का लेखक कहता है, ''पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं, वे धर्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं।'' (नीतिवचन 16:31)। कई लोग जब बूढ़े होने लगते हैं तब अपने कार्य में ढीले पड़ने लगते हैं तथा एक बड़ा ही शान्तपूर्ण माहोल पसन्द करते हैं। यह बात उचित है क्योंकि वृद्धावस्था के साथ अक्सर ऐसा होता है, परन्तु मसीही जीवन में ऐसा नहीं होता क्योंकि मसीही जीवन से कोई रिटायर नहीं होता। परमेश्वर ने कोई भी ऐसी आयु सीमा मसीही के लिये नियुक्त नहीं की है। यीशु ने कहा था, ''परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा।'' (मत्ती 24:15)। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर आप से कुछ अधिक की अपेक्षा कर रहा है। आप शायद शारीरिक रूप से इतना करने के योग्य नहीं है। परन्तु इसका अर्थ यह भी नहीं है कि आप परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर रही है, शायद आप कहें, ''मैंने प्रभु के लिये बहुत कार्य किया है, अब किसी जवान स्त्री को यह कार्य करना चाहिये।'' बुद्धिमान राजा सुलेमान ने ऐसा कहा था, ''मूर्ख छाती पर हाथ रखे रहता है और अपना मांस खाता है।'' (सभोपदेशक 4:5)। जिस प्रकार से एक सुस्त व्यक्ति अपने आप को शारीरिक रूप से हानि पहुंचाता है उसी प्रकार से यदि एक मसीही अपने आप को प्रभु के कार्य से दूर कर लेता है तथा कलीसिया के कार्यों में भाग नहीं लेता है, तब वह अपने जीवन को आत्मिक रूप से नष्ट कर रहा है। मैं जानती हूं कि आप मूर्ख नहीं बनना चाहती तथा अपने आप को नष्ट नहीं करना चाहती, तब परमेश्वर आप से क्या चाहता है?

1. बूढ़ों में बुद्धि पाई जाती है, और दीन लोगों में समझ होती है। (अय्यूब 12:12) क्योंकि आप काफ़ी उमर-दराज़ हैं तथा अनुभवी हैं, इसलिये आप जवानों को अच्छी से अच्छी सलाह दे सकती हैं। आप उनके लिये परामर्श का एक स्रोत है। यदि आपको सलाह देने का सुवअवसर मिलता है तो इन्हें बड़े प्रेम के साथ सलाह दीजिये रौब के साथ नहीं।

2. ''इसी प्रकार बूढ़ी स्त्रियों का चाल-चलन पवित्र लोगों- सा हो, दोष लगाने वाली और पियक्कड़ नहीं, पर अच्छी बातें सिखाने वाली हो।'' (तीतुस 2:3)।

एक अच्छा उद्धाहरण दूसरों के सामने रखना आपके लिये बहुत आवश्यक है। आप अपना जीवन इस प्रकार से बितायें ताकि जवान स्त्रियां आप से सीखें तथा आपका आदर करें और वे आपके जीवन का अनुसरण करें जैसे आप यीशु का अनुसरण करती हैं।

3. ''वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें, कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें, और संयमी, पतिव्रता, घर का काम-काज करने वाली, भली और

अपने-अपने पति के आधीन रहने वाली हो, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाएं।'' (तीतुस 2:4-5) ऐसा मत सोचिये कि आपने अच्छा उदाहरण दूसरों के सामने रख दिया और अब आपका काम समाप्त हो गया है। अच्छा उदाहरण रखने का उद्देश्य है कि आप जवान स्त्रियों को अच्छी तरह से सिखायें। उन्हें शिक्षा दें कि उन्हें कैसा व्यवहार करना चाहिये। यदि आपका जीवन बाइबल की शिक्षा के अनुसार एक अच्छा उदाहरण नहीं है, तब लोग शायद परमेश्वर के वचन की निन्दा करें।

जब आप बुढ़ापे की ओर अग्रसर होती हैं, तब आप को गलतियों 6:9 को याद रखना चाहिये, जहां इस प्रकार से लिखा है, ''हम भले काम करने में हियाव न छोड़ें, क्योंकि यदि हम ढीले न हों, तो ठीक समय पर कटनी काटेंगे।''

परमेश्वर की सेवा में निरन्तर लगे रहने से, हमें इस बात से पूरा निश्चय हो जाता है कि यीशु के द्वारा हमें अवश्य प्रतिफल मिलेगा। इसलिये बाइबल परमेश्वर का वचन कहता है, ''जो दुख तुझ को झेलने होंगे, उनसे मत डर, प्राण देने तक विश्वासी रह, तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा।'' (प्रकाशितवाक्य 2:10)। बूढ़ा होना एक आशिष की बात है। नीतिवचन का बुद्धिमान लेखक कहता है, ''पक्के बाल शोभायमान मुकुट ठहरते हैं, वे धर्म के मार्ग पर चलने से प्राप्त होते हैं।'' (नीतिवचन 16:31)। जब बूढ़ी स्त्रियां परमेश्वर के नियम अनुसार नहीं चलती तब वे अपने मन में दूसरों के प्रति ग़लत बातें बोलती हैं तथा कई बार ऐसी बातें बोलती हैं जिससे दूसरों को चोट पहुंचती हैं। बूढ़े होकर परमेश्वर के साथ चलना बुद्धिमानी की बात है।

आज इस संसार को ऐसी स्त्रियों की आवश्यकता है जो बूढ़ी होने पर भी ऐसे सुअवसरों की खोज में रहती हैं कि वह समाज तथा अपने आस-पास के लोगों के लिये कुछ कर सकें। शायद जब यह स्त्रियां जवान थीं तब समाज के लिये कुछ करने में असमर्थ थीं, क्योंकि वे परिवार की बहुत सी जिम्मेदारियों से घिरी हुई थीं।

उस राजा के बारे में की गई भविष्यवाणियां जो परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठकर राज्य करेगा

जिम ई. वॉलड्रन

पहले से की गई अनेकों भविष्यवाणियों में एक ऐसे बालक के बारे में कई बार कहा गया था, "जो लोहे के राजदण्ड से राज्यों के ऊपर राज्य करेगा" जैसे कि, उसके आने के लगभग 1040 ईसवी पूर्व में, भविष्यवक्ता नातान के द्वारा कहा गया था, कि दाऊद के वंश से एक ऐसा जन उत्पन्न होगा जो अपने राज्य की स्थापना करेगा और उसकी राजगद्दी सदैव स्थिर बनी रहेगी,

> "जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूंगा।

मेरे नाम का घर वही बनवाएगा। और मैं उसकी, राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूंगा।" (2 शमूएल 7:12-13)।

इसी भविष्यवाणी को ध्यान में रखकर दाऊद ने कहा था:

"मेरे प्रभु से यहोवा की वाणी यह है, तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं। तेरे पराक्रम का राजदण्ड यहोवा सिय्योन से बढ़ाएगा। तू अपने शत्रुओं के बीच में शासन कर।" (भजन संहिता 110:1-2)।

जब सुलैमान इस्राएल का राजा बना था, जिसका वर्णन हम 1 इतिहास की पुस्तक में पढ़ते हैं, तो लिखा है, कि दाऊद का सिंहासन वास्तव में "यहोवा का सिंहासन" था, जैसे कि हम पढ़ते हैं, "तब सुलैमान अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकर यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा और समृद्धशाली हुआ, और इस्राएल उसके अधीन हुआ।" (1 इतिहास 29:23; 1 इतिहास 28:5)।

इसके लगभग तीन सौ वर्ष बाद यशायाह भविष्यवक्ता ने लिखकर इस प्रकार कहा था:

"क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुत्ता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर अनन्तकाल का पिता, और शांति का राजकुमार रखा जाएगा। उसकी प्रभुत्ता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शांति का अन्त न होगा, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और संभाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।" (यशायाह 9:6-7)।

इस बात को कहने से कुछ ही समय पहले यशायाह ने भविष्यवाणी करके कहा था, कि दाऊद के घराने को एक बड़ा ही अद्‌भुत चिन्ह् दिखाया जाएगा:

"इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह् देगा। सुनो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जन्मेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।" (यशायाह 7:14)।

जब गलील के नासरत नगर में मरियम नाम की एक कुंवारी के पास जिब्राईल नाम के एक स्वर्गदूत को भेजा गया था, तो उसने उसे यह संदेश दिया था कि वह एक पुत्र को जन्म देगी, लिखा है:

"स्वर्गदूत ने उस से कहा, हे मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है। देख तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; तू उसका नाम यीशु रखना। वह महान् होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अंत न होगा।" (लूका 1:30-33)।

इन्हीं भविष्यवाणियों के अनुसार सैकड़ों वर्ष बाद जब यीशु का जन्म हुआ था, तो इस बारे में मत्ती ने लिखकर इस प्रकार कहा था:

"यह सब इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था, वह पूरा हो, "देखो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जन्मेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा", जिसका अर्थ है - परमेश्वर हमारे साथ।" (मत्ती 1:22-23)।

सो इस प्रकार, यहूदा के गोत्र के सिंह का जन्म संसार में स्वर्गीय भविष्यवाणियों के इस आधार पर हुआ था, कि वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठकर राज्य करेगा।

शिष्यता का दाम

जॉन स्टेसी

आज हम एक उन्नतिशील समय में रह रहे हैं। चाहे हम अपने घर में हो, या स्कूल में हो या काम पर हो, हर जगह हम से कुछ करने की आशा की जाती है। ऐसे ही मसीही लोगों को भी यह अनुभव होना चाहिए कि उन्हें अपनी शिष्यता के लिये भी कुछ दाम चुकाना है। इससे भी पहले कि हम मसीह की शिष्यता में आते, परमेश्वर को हमारे छुटकारे के लिये एक दाम चुकाना पड़ा था। उस बड़े दाम के बारे में 1 पतरस 1:19 में यूं लिखा है कि तुम्हारा छुटकारा निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ है। शिष्य शब्द का अर्थ है एक सीखने वाला या अनुयायी। यदि हम वास्तव में मसीह के चेले बनना चाहते हैं तो कुछ दाम हमें अवश्य देना है। इस विषय में बाइबल क्या सिखाती है, हम देखेंगे।

पहली बात यह है, कि हमें मनुष्यों का पकड़ने वाला बनना चाहिए। जिस समय यीशु ने पतरस और अन्द्रियास को अपना शिष्य होने के लिये बुलाया था, उसने उनसे कहा था कि मेरे पीछे हो लो, और मैं तुम्हें मनुष्यों का पकड़ने वाला बनाऊंगा। यदि आप मनुष्यों को पकड़ने में लगे हुए हैं, तो आप बेरोजगार हैं।

दूसरी बात शिष्यता के संबंध में हम यह देखते हैं कि हमें मसीह के समान बनने की आवश्यकता है। यीशु ने मत्ती 10:25 में कहा था कि चेले का गुरू के समान होना ही बहुत है। क्या आप मसीह के समान बनने का प्रयत्न कर रहे हैं?

तीसरे स्थान पर, शिष्यता के कारण विरोध का भी सामना करना पड़ सकता है। लूका 14:26 में यीशु ने कहा था, यदि कोई मेरे पास आए और अपने पिता और माता और पत्नी और लड़केवालों और भाइयों और बहनों वरन अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता। हमें अपने सम्बंधियों से कम और मसीह से अधिक प्रेम करना चाहिए। और इसके कारण विरोध भी हो सकता है।

चौथे, एक शिष्य को अपना क्रूस उठाने की आवश्यकता है। यीशु ने मत्ती 10:38 में कहा था कि जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले, वह मेरे योग्य नहीं। पहली शताब्दि में यदि किसी को क्रूस उठाकर जाते देखा जाता था तो यह इस बात को दर्शाता था कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाने वाला है। यदि आप अपना क्रूस

उठाकर चल रहे हैं तो आप वही करेंगे जो पौलुस ने गलतियों 5:24 में कहा था कि जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।

पांचवें स्थान पर, एक शिष्य वह है जिसे सीखने की आवश्यकता है। लूका 11:1 में हम पढ़ते हैं कि यीशु के चेलों में से एक ने उससे कहा कि, हे प्रभु हमें प्रार्थना करना सिखा। वे सीखना चाहते थे। किन्तु आज बहुतेरे ऐसे नहीं है।

फिर, यूहन्ना 8:31 में यीशु ने कहा था कि यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।

छठी बात यह है, कि एक शिष्य को फलदायक होना चाहिए। यूहन्ना 15:8 में यीशु ने कहा था कि मेरे पिता की महिमा इसी से होती है कि तुम बहुत सा फल लाओ, तब ही तुम मेरे चेले ठहरोगे।

सातवें स्थान, पर एक शिष्य वह है जो अपने भाईयों के साथ प्रेम रखता है। यीशु ने यूहन्ना 13:35 में इस प्रकार कहा था कि यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।

सो इस प्रकार हम देखते हैं कि शिष्यता दामरहित नहीं हैं ये दाम अवश्य ही चुकाने हैं। परन्तु यदि हम ऐसा नहीं करते, तो नरक का मुंह हमारे लिये हमेशा खुला हुआ है।

मसीह का जीवन

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

बाइबल के नए नियम की पहली चार पुस्तकों के नाम हैं मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना। इन चारों पुस्तकों में हम प्रभु यीशु के जन्म के बारे में (मत्ती 1:1-2:12; लूका 1:26-2:20), और उससे सम्बन्धित उस घटना के बारे में भी पढ़ते जब वोह बारह वर्ष का था (लूका 2:41-52)। परन्तु विशेष रूप से इन पुस्तकों में यीशु के जीवन के अंतिम तीन वर्षों की घटनाओं का वर्णन हमें मिलता है। उन तीन वर्षों में जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार प्रचार करना आरम्भ किया था, और बहुतेरे लोग उसके प्रचार को सुनकर उसके पास आए थे, तो उन्हीं में से यीशु ने अपने लिये बारह चेलों को चुना था। उन चेलों को यीशु ने इसलिये चुना था ताकि उसके स्वर्ग पर वापस चले जाने के बाद वे उसके सुसमाचार का प्रचार सब लोगों में करेंगे। वे चेले उसके ''प्रेरित'' कहलाए थे।

यीशु ने पृथ्वी पर अनेकों आश्चर्यकर्मों को किया था, जो इस बात के गवाह थे कि वोह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। (यूहन्ना 2:11; 5:36; 10:25; 37-38; 14:11; लूका 7:20-22; मत्ती 9:1-8; इब्रानियों 2:4)। जिन आश्चर्यपूर्ण कामों को यीशु ने किया था उनमें से कुछ का वर्णन हमें बाइबल में मिलता है। और लिखा है, कि ''ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है, और विश्वास करके उसके द्वारा जीवन पाओ।'' (यूहन्ना 20:30,31)। प्रभु

यीशु द्वारा किए गए आश्चर्यपूर्ण सामर्थ्य के कामों का वर्णन नए नियम की पहली चार पुस्तकों में हमें इस प्रकार मिलता है:

1. जल को दाखरस में बदलना (यूहन्ना 2:1-11)।
2. राजा के कर्मचारी के पुत्र को चंगा करना (यूहन्ना 4:46-54)।
3. मंदिर में एक व्यक्ति को चंगाई देना (मरकुस 1:23-26; लूका 4:33-35)।
4. पतरस की सास को चंगा करना (मत्ती 8:14-15; मरकुस 1:30-31; लूका 4:38-39)।
5. बहुत बड़ी मात्रा में मछलियाँ पकड़ना (लूका 5:1-11)।
6. एक कोढ़ी को चंगाई देना (मत्ती 8:2-4; मरकुस 1:40-42; लूका 5:12-13)।
7. लकवा मारे व्यक्ति को चंगा करना (मत्ती 9:2-7, मरकुस 2:3-12; लूका 5:18-25)
8. एक मनुष्य को बेतहसदा के कुण्ड के पास चंगाई देना (यूहन्ना 5:1-9)।
9. एक सूखे हुए हाथवाले व्यक्ति को चंगा करना (मत्ती 12:10-13; मरकुस 3:1-5; लूका 6:6-10)।
10. एक सूबेदार के सेवक को चंगाई देना (मत्ती 8:5-13; लूका 7:1-10)।
11. एक विधवा के मरे हुए पुत्र को ज़िन्दा करना (लूका 7:11-15)।
12. दो अन्धों को चंगाई देना (मत्ती 9:27-31),
13. तूफ़ान को शांत करना (मत्ती 8:23-27; मरकुस 4:37-41; लूका 8:22-25)।
14. दुष्टात्मा-ग्रस्त मनुष्य को चंगा करना (मत्ती 8:28-34; मरकुस 5:1-15; लूका 8:27-35)।
15. एक स्त्री को लहू बहने की बीमारी से चंगाई देना (मत्ती 9:20-22; मरकुस 5:25-29; लूका 8:43-48)।
16. याईर की बेटी को जिलाना (मत्ती 9:18-19,23-25; मरकुस 5:22-24,38-42; लूका 8:41-42,49-56)।
17. एक गूंगे को चंगा करना (मत्ती 9:32,33)।
18. 5000 लोगों को भोजन खिलाना। (मत्ती 14:15-21; मरकुस 6:35-44; लूका 9:12-17; यूहन्ना 6:5-13)।
19. पानी के ऊपर चलना (मत्ती 14:25; मरकुस 6:48-51; यूहन्ना 6:19-21)।
20. कनानी स्त्री की बेटी को चंगा करना (मत्ती 15:21-38; मरकुस 7:24-30)।
21. एक गूंगे-बहरे को चंगाई देना (मरकुस. 7:31-37)।
22. आश्चर्यक्रम द्वारा 4000 लोगों को भोजन खिलाना (मत्ती 15:32-38; मरकुस 8:1-9)
23. एक अंधे को चंगाई देना (मरकुस 8:22-26)।
24. दुष्टात्मा से ग्रस्त लड़के को चंगा करना (मत्ती 17:14-18; मरकुस 9:17-19; लूका 9:38-43)।
25. मछली के मुंह में से सिक्का निकालना (मत्ती 17:24-27)।

26. एक जन्म के अंधे को चंगा करना (यूहन्ना 9:1-41)
27. एक बहरे और अंधे को चंगा करना (मत्ती 12:22; लूका 11:14)।
28. एक अपाहिज स्त्री को चंगाई देना (लूका 13:11-13)
29. जलन्धर के रोगी को चंगा करना (लूका 14:1-4)।
30. लाज़र को ज़िन्दा करना (यूहन्ना 11:1-44)
31. दस कोढ़ियों को चंगाई देना (लूका 17:11-19)
32. दो अंधों को चंगाई देना (मत्ती 20: 29-34; (मरकुस 10:46-52; लूका 18:35-43)।
33. अंजीर के पेड़ को सुखा देना (मत्ती 21:18-22; मरकुंस 11:12-14; 20-25)।
34. मालकस का कान चंगा करना (लूका 22:50-51)
35. आश्चर्यजनक रूप से मछलियां पकड़ना (यूहन्ना 21:1-11)

सुसमाचार की पुस्तकों में यीशु के बपतिस्मे का भी वर्णन मिलता है। (मत्ती 3:13-17; मरकुस 1:9-11; लूका 3:21-22)। यीशु ने इसलिये बपतिस्मा नहीं लिया था कि उसे पापों की क्षमा की आवश्यकता थी। पर उसने परमेश्वर की इच्छा को मानने के लिये बपतिस्मा लिया था। वोह हमारे लिये आदर्श बनना चाहता था। उसके बपतिस्मा लेने के समय परमेश्वर ने यह कहा था, कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं प्रसन्न हूं।'' (मत्ती 3:17) ऐसे ही, सुसमाचार की पुस्तकों में हम यीशु की परीक्षा में पड़ने के बारे में भी पढ़ते हैं। (मत्ती 4:1-11; लूका 4:1-13)। यीशु के जीवन में एक बड़ी ही महत्वपूर्ण घटना तब घटी थी जब उसका रूपान्तर हुआ था (मत्ती 17:1-8; मरकुस 9:2-10; लूका 9:28-36; 2 पतरस 1:16-18)। इस घटना में, पतरस, याकूब और यूहन्ना नाम के यीशु के चेलों के सामने उसका रूप बदल गया था। उस समय भी आकाश से परमेश्वर की यह आवाज़ आई थी कि ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, इसकी सुनो'' (मरकुस 9:7) यीशु ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में यरूशलम में प्रवेश किया था (मत्ती 21:1-11; लूका 19:28-40 यूहन्ना 12:12-19), वहां उसने परमेश्वर के मन्दिर को शुद्ध किया था (मत्ती 21:12-17; मरकुस 11:15-19; लूका 19:45-48)। फिर हम पढ़ते हैं कि वोह कैसे पकड़वाया गया था, उस पर दोष लगाए गए थे, उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था, और मरने के बाद वोह फिर से जी उठा था (मत्ती 26: 36-28:10; मरकुस 14:32-16:18; लूका 22:39-24:49; यूहन्ना 18:1-21:14)।

क्या आपने थैंक यू कहा?

अर्नेस्ट गिल

कई साल पहले की बात है, दक्षिण भारत से किसी भाई ने फोन पर मुझे बताया कि उसके यहां से एक व्यक्ति ने नौकरी के लिए अप्लाई किया था और हमारे शहर में उसका इंटरव्यू है। और वह उसे हमारे यहां भेज रहा है। उसने अनुरोध किया कि

उसे हिन्दी और इंग्लिश नहीं आती, इसलिए आप उसकी मदद कर देना। हमारे लिए वह एक अनजान व्यक्ति था।

वह व्यक्ति पंजाब आया, उसका इंटरव्यू हुआ और वह अपने घर वापस चला गया। कुछ दिन बाद उसने फोन करके मुझे बताया कि उसकी नौकरी लग गई है। उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उसने हमें अपने यहां ठहराने के लिए धन्यवाद भी किया। उसे हिन्दी या अंग्रेजी नहीं आती थी, इसलिए उसने दो-तीन शब्द ही बोले जो कि अंग्रेजी में थे, जिन्हें आज के समय में कोई भी व्यक्ति, जिसे अंग्रेजी न भी आती हो, आसानी से बोल सकता है। बड़े जोश के साथ उसने अपना नाम बताते हुए जॉब, और थैंक यू के दो ही शब्द कहे। मैंने भी उससे बात की और टूटी-फूटी अंग्रेजी में उसके समझने लायक वैरी गुड और गॉड ब्लैस कह कर फोन रख दिया। इतने शब्दों के साथ ही उसने अपने दिल की बात कह दी थी और हम भी समझ गए थे कि वह हमारे यहां उसे ठहराने के लिए अपना आभार व्यक्त करना चाहता है। हालांकि हमने उसके लिए कुछ अधिक नहीं किया था।

इसके बाद उसे हिम्मत हो गई कि वह दो-तीन शब्दों में ही सही, मेरे साथ अपने मन की बात कर सकता है। फिर क्या था, हर दो-तीन महीने बाद उसके फोन आने लगे। बात करके जैसे उसे सुकून सा मिल जाता हो। अब उसने हालचाल पूछने के लिए अंग्रेजी के एक-दो शब्द और सीख लिए थे। बात तो लम्बी नहीं होती थी, परन्तु वह फोन जरूर करता था।

कई साल बीत जाने के बाद आज भी यह सिलसिला जारी है। वह आज भी फोन करता है और हाल चाल पूछता है और अपने काम के बारे में बताता है और थैंक यू कहकर फोन रख देता है। उसे तसल्ली हो जाती है कि मेरे साथ बात हो गई और मुझे भी सुखद आश्चर्य होता है कि इतने सालों के बाद भी उसने हमें भुलाया नहीं है।

आज भी उसका फोन आया था। मुझे अच्छा लगा कि उसने काफी शब्द सीख लिए हैं और उसकी बात आज पहले से लम्बी भी थी। आज उसने बताया कि अब उसका जॉब पार्ट टाइम है। मैंने उससे कहा कि हम आपकी नौकरी के लिए प्रार्थना करेंगे। फिर भी मुझे लगा कि वह खुश है।

फोन पर उससे बात करने के बाद मैंने विचार किया कि यह व्यक्ति असल में हमारे लिए इस बात में उदाहरण है कि हम में से कितने लोग हैं, जो रोज-बरोज परमेश्वर की बड़ी-बड़ी आशिषें प्राप्त करते हैं पर उसे धन्यवाद देना जरूरी नहीं समझते। हमें परमेश्वर से बातचीत करनी चाहिए; उसे धन्यवाद देना चाहिए। बहुत बार यह समझकर कि हम बात नहीं कर सकते, या हमारी बात समझ में नहीं आएगी, परमेश्वर से बात करने को टाल देते हैं।

बहुत से लोग केवल इसलिए प्रार्थना नहीं कर पाते हैं क्योंकि उन्हें प्रार्थना की भाषा कठिन लगती है। बहुत से लोगों को लगता है कि उन्हें प्रार्थना करना नहीं आता या फिर वे कोई और बहाना बनाते हैं। असल में धन्यवाद कहने के लिए आपको लम्बी-चौड़ी बातें करने की आवश्यकता नहीं है। बात करना तो बात करने से ही आता है। असल में जब हम बाइबल पढ़ रहे होते हैं तो परमेश्वर हमारे साथ

बात कर रहा होता है, पर जब हम प्रार्थना कर रहे होते हैं तो हम उसके साथ बात कर रहे होते हैं। जब हम उसकी बात को सुनते हैं तो वह भी हमारी बात की ओर कान लगाता है।

प्रार्थना कोई छोटी या बड़ी नहीं होती। आप थोड़े शब्दों में प्रार्थना करे या बहुत से शब्दों में अगर रटी-रटाई नहीं है, दिखावटी नहीं है, बल्कि दिल से निकली है तो यह प्रार्थना है और इसके छोटा या बड़ा होने से परमेश्वर को कोई फर्क नहीं पड़ता।

बस आप प्रार्थना करना आरंभ करें और अगर यह सिलसिला शुरू हो जाए तो यकीन मानिए कि आपको कभी लगेगा ही नहीं कि परमेश्वर आप से दूर है। सुबह उठने के बाद से लेकर, खाना खाने से पहले, काम पर जाने से पहले, घर से बाहर जाने से पहले, सोने से पहले जितनी भी बार हो सके परमेश्वर से बात करें और उसके कामों के लिए उसे धन्यवाद दें (देखें कुलुस्सियों 3:17)।

एक बात जो मैं निजी तौर पर कहना चाहूंगा, वह यह है कि यीशु को अपना उद्धारकर्ता मानकर उसके परिवार का हिस्सा बन जाएं और परमेश्वर को पिता कहकर बुलाएं और फिर उसके पुत्र यीशु के द्वारा उससे मांगें। याद रखें यीशु ने कहा था कि हमारा पिता हमारे मांगने से पहले जानता है कि हमें किन चीजों की आवश्यकता है (देखें मत्ती 6:8)। यानी हम उसके साथ अपना संबंध इस प्रकार पाएंगे जैसे पिता और पुत्र का होता है। फिर आप पाएंगे कि केवल मांगना ही नहीं होगा बल्कि परमेश्वर आपको अपने पुत्र-पुत्रियों होने का अधिकार दे देता है। यह वही अधिकार है, जो पुत्र के रूप में यीशु के पास है। यानी वह हमें अपने वारिस होने का अधिकार भी देता है।

परमेश्वर को उसकी दी हुई आशिषों के लिए धन्यवाद देते रहना कितना सुखद अनुभव है।

विवाह और घर के लिए परमेश्वर की योजना

कोय रोपर

किसी परिवार में सफल मसीही परिवार कैसे हो सकता है? खुशहाल घर पर अब तक की दी गई सारी नसीहत को एक शब्द में संक्षिप्त करना हो तो वह प्रेम ही होगा। यदि हम अपने घरों को सफल बनाना चाहते हैं तो उनकी पहचान प्रेम के द्वारा ही होनी आवश्यक हैं।

पौलुस ने मसीही जीवन में प्रेम के महत्व को माना था, सही कारण है कि आत्मा के फल की विशेषताओं की सूची का आरंभ उसने प्रेम के साथ किया। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास नम्रता और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं (गलातियों 5:22, 23)।

मसीही धर्म में प्रेम की भूमिका महत्वपूर्ण है। परमेश्वर के विवरण में प्रेम प्रमुख है क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। (1 यूहन्ना 4:8)। सब से बढ़कर, मनुष्य के साथ

परमेश्वर का संबंध प्रेम से ही जाना जाता है (यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 4:10; रोमियों 5:8, 9)। परमेश्वर द्वारा हमें दी गई दो बड़ी आज्ञाएं परमेश्वर से प्रेम और अपने पड़ोसी से प्रेम रखना ही तो है (मत्ती 22:37-39)। मसीह के चेलों के रूप में हमारे लिए सबसे पहली आज्ञा एक-दूसरे से प्रेम वेसे ही रखने की है, जैसे मसीह ने हमसे प्रेम किया (देखें यूहन्ना 13:34, 35)। 1 कुरिन्थियों 13 के अनुसार प्रेम किसी भी गुण या दान से जो हमारे पास है, बड़ा है। पौलुस ने इस अध्याय को यह कहते हुए समाप्त किया था पर अब विश्वास आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इन में से बड़ा प्रेम है (1 कुरिन्थियों 13:13)।

प्रेम शब्द का इस्तेमाल आज कई तरह से होता है। बराबर जोश से हम कहते हैं कि हम परमेश्वर से प्रेम प्रगट करते हैं, अपने साथी से प्रेम करते हैं, अपने बच्चों और अपने माता-पिता से प्रेम करते हैं, अपने देश से प्रेम करते हैं, अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं, फलों से प्रेम करते हैं, खरीददारी से प्रेम करते हैं, फुटबॉल से प्रेम करते हैं, और टीवी देखने से प्रेम करते हैं, हमारे घरों को सफल बनाने वाले प्रेम को इन अन्य प्रेमों से कैसे जोड़ा जा सकता है? इस पाठ में हम गलातियों 5:22, 23 में बताए गए प्रेम पर दो प्रश्नों के उत्तर देंगे।

वह कौन-सा प्रेम है, जो आत्मा के फल का भाग है?

हमारे वचन पाठ में पाया जाने वाला प्रेम (अगापे) प्रेम है, जो परमेश्वर हमारे साथ रखता है (यूहन्ना 3:16) और हमें परमेश्वर और दूसरों के लिए यही प्रेम रखना आवश्यक है (मत्ती 22:37-39)। प्रेम के लिए यही शब्द 1 कुरिन्थियों 13 में और उस प्रेम के लिए जो पति का अपनी पत्नी के लिए होना चाहिए (इफिसियों 5:25) इस्तेमाल किया गया है।

यह प्रेम कौन सा है। अगापे मुख्यतया भावना नहीं है, क्योंकि इसकी आज्ञा दी जा सकती है, जबकि भावनाओं के लिए आज्ञा नहीं दी जा सकती। वास्तव में यह मुख्यत: इच्छा का एक काम यानी किसी दूसरे व्यक्ति या प्रियजन के लिए बेहतरीन करने का निश्चय है। ऐसे निश्चय से व्यवहार बनते हैं। अन्य शब्दों में अगापे प्रेम प्रियजन के लिए बेहतरीन करने की वचनबद्धता है। यही प्रेम है, जो परमेश्वर को भाने वाला घर बनाने में सहायता करेगा।

अगापे प्रेम प्रियजन की सुन्दरता, अच्छाई या उपयोगिता जैसी बाहरी परिस्थितियों पर आधारित नहीं है। हमारे बूढ़े होने के बाद बाल सफेद होने या झड़ जाने के बाद हमारी किसी समय रही अच्छी शक्ल सूरत चले जाने के बाद झुर्रियां आने और दर्द बढ़ने के बाद और रोमांच खत्म हो जाने के बावजूद यह प्रेम बना रहता है।

प्रेम तब भी रहता है, जब जीवन साथी, बच्चा माता-पिता जैसा प्रियजन अप्रिय हो जाए, यानी जब उसका जीवन उम्मीद के अनुसार न हो या उसने कुछ गलत कर दिया हो तब भी जब कोई प्रेम का हकदार न हो, अगापे प्रेम बना रहता है।

जो हमारे प्रेम का हकदार न हो उससे कैसे प्रेम करें? जब पत्नी प्रेम करने वाली हो, जब पति अपनी पत्नी के लिए उपहार लाया हो, या जब बच्चे बात मानते

हुए अपने कमरे को साफ-सुथरा रखें और कपड़े पहनकर आराधना सेवाओं में जाने को तैयार हो, तो परिवार में लोगों से प्रेम रखना आसान होता है। परन्तु जब बच्चा रात भर रोता रहे, या छह साल का बच्चा अपनी मां की पसंदीदा डिश तोड़ दे, या नवयुवक विद्रोही हो, तो पुनः अपने परिवार के लोगों से प्रेम करना अधिक कठिन लगता हैं जब पति या पत्नी शिकायत कर रहा या रही हो या अधिक समर्पित कर्मचारी बनने के लिए घर के दायित्वों की उपेक्षा कर रहे हैं, या जब बुजुर्ग माता-पिता जिद्दी और झगड़ालू हैं, तो हम अपने परिवार के लोगों से कैसे प्रेम रखें? कोई कह सकता है मानवीय रूप में ऐसा प्रेम असंभव है। और यह सही है। परन्तु जो बात मानवीय रूप में असंभव है, वह ईश्वरीय रूप में संभव है। हमारे पास अपने अन्दर पवित्र आत्मा का वास है, और हमारे पास, नालायक मनुष्यजाति के प्रेम का उदाहरण है, इस कारण हम वैसे ही प्रेम कर सकते हैं, जैसे परमेश्वर प्रेम करता है। हम उनसे प्रेम कर सकते हैं जो प्रेम किए जाने के लायक नहीं हैं

जब हम अपने परिवार के लोगों के लिए अगापे प्रेम को दिखाते हुए, इस प्रकार प्रेम करते हैं तो हमारे घर न केवल हमें बल्कि परमेश्वर को भी भाने वाले बनेंगे।

पापी कौन है?

परमेश्वर का वचन स्पष्ट है रोमियों 3:23 में कहा गया है, इसलिए कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है। 1 यूहन्ना 1:8 में और कहा गया है, यदि हम कहें कि हम में कुछ भी पाप नहीं तो हम अपने आपको धोखा देते हैं और हम में सत्य नहीं।

आप किसी बच्चे का मासूम सा चेहरा देखें। बच्चे पापी नहीं होते। और यीशु भी आपके साथ सहमत होता है जब वह कहता है, मैं तुम से सच कहता हूंकि जब तक तुम न फिरो और बालको के समान न बनो, तुम स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करने पाओगे।

ये सब कौन है, जिन्होंने पाप किया है? रोमियों 3:12-18 में उन्हें जिन्होंने पाप किया है, बड़े लोगों के रूप में पहचाना गया है, जिन्होंने भलाई करने की जगह बुराई करने को चुना। सब भटक गए, सब के सब निकम्मे बन गए है; कोई भलाई करने वाला नहीं, एक भी नहीं। पाप तो परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ना या सही और गलत चुनने को कहा गया है।

नवजात और बालक सुरक्षित हैं यानी वे बुराई नहीं करते क्योंकि उन्हें भले बुरे का ज्ञान नहीं है। परन्तु सब बड़े लोग जो मानसिक रूप में बड़े हैं उन्होंने पाप किया है और उसका उत्तर उन्हें परमेश्वर के सामने देना पड़ेगा।